Lesson 1

तबला का इतिहास -

तबला प्राचीन वाद्यन्त्रों में से एक है , प्राचीन काल से इसका प्रयोग गायन, वादन तथा नृत्य आदि कलां की संगत करने के लिए जाता रहा है ।" तबला " पखावज का ही एक परिवर्तित रूप है । तबला की उत्पत्ति " पखाबाजी" से ही मानी जाती है । पखाबज को दो हिस्सों में काटकर तबला का निर्माण किया गया .

तबला के भाग-

तबला को दो भागों में विभाजित किया गया है .

1. दाहिना तबला -

दाहिना तबला को कुछ लोग दाहिना अथवा " दुग्गी " भी कहते हैं , यह डुग्गी शीशम की लकड़ी की बनी होती है । इसके ऊपर चमड़े का आवरण चढ़ा होता है ।

2. बांया तबला -

बांये तबले को " दग्गा " कहा जाता है यह इस्पातपीतल और ताम्बे आदि धातुओं का बना होता है । इसमें भी चमड़े का आवरण चढ़ा होता है उपर चित्र में आप देख सकते हैं । चमड़े से मढ़े हुए मुख पर भी तीन भाग होते है .

1. चाटी किनारा तबला पर सबसे किनारे का भाग
2. मैदान लव - तबले पर स्याही ओर किनारे के बीच का भाग
3. बीच या स्याही तबले पर सबसे किनारे का भाग .

तबले के बीचो -

बीच जो काले रंग का चकते जैसा भाग "सयाही" कहलाता है । यह चावल या गेंहू के मांड में कई प्रकार की चीजों को मिला कर लेप तैयार करके बनाया जाता है , जो सूखने के बाद खनकदारी आवाज प्रदान करता है .

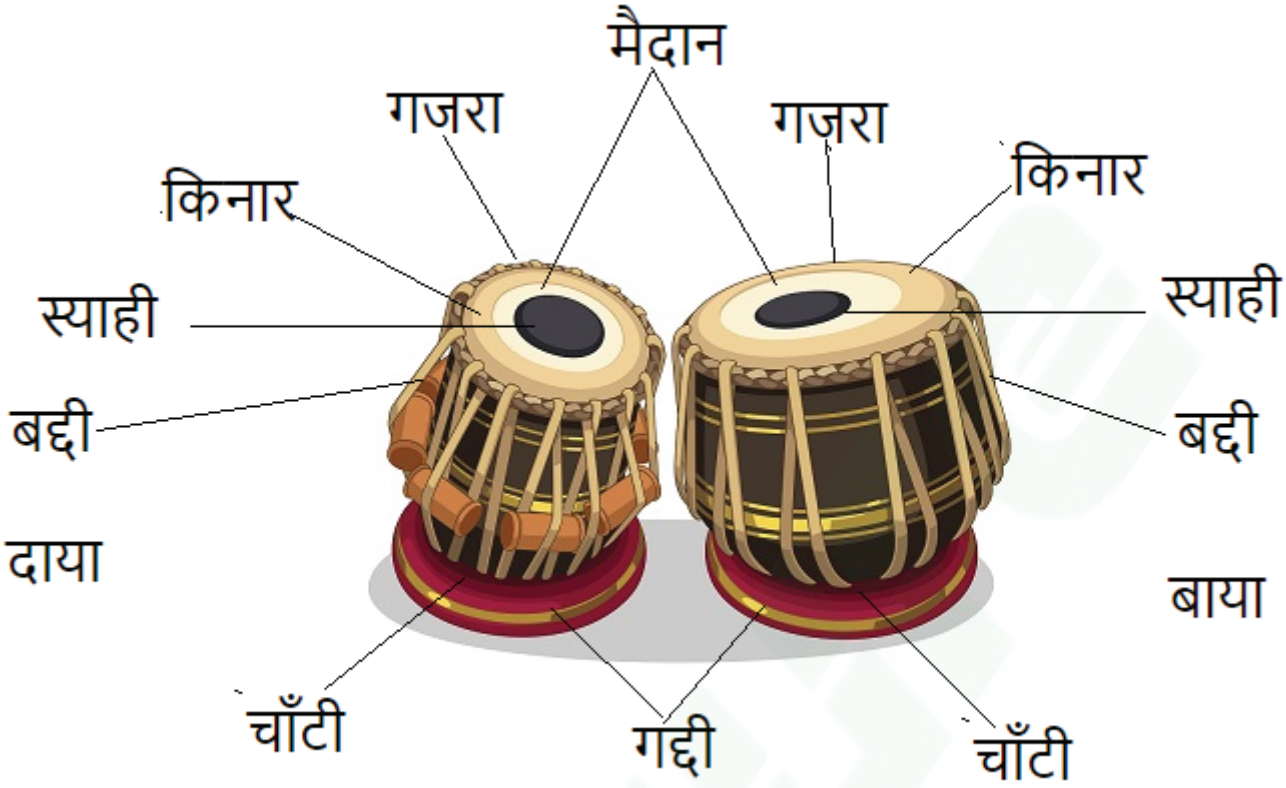

लय ताल -

तबला के बोल - तबले पर बजने वाले बोलो को शब्द , अक्षर या वर्ण कहते है । ये बोल अलग अलग " घरानों " व विद्वानों द्वारा भिन्न - भिन्न तरीके से बताये गए है । लेकिन साधारणतः जो "बोल" तबले पर बजाये जाते है , तालो " ताल" के अनुसार आगे आने वाले लेसनों में देखेंगे |

तबला वादक -

तबला वादकों में " पंजाब" घराने के अल्लाह रक्खा खा और उनके पुत्र " जाकिर हुसैन " का नाम सबसे पहले लिया जाता है । और अन्तराष्ट्रीय स्तर पर चतुरलाल साहब का उल्लेखनीय योगदान रहा है । और भी कई नाम ऐसे है , जिन्होंने " तबला वदानी" के क्षेत्र में अपना नाम रोशन किया है |

तबले की रचनाएँ-

तबला की रचनाये तबला पर बजने वाली रचनाये निम्न है

बोल -

तबले में बजने वाले शब्द समूहों को बोल कहते है .

कायदा -

जिन बोलो के नियमित समूह की रचना " ताली" के विभाग और ताली , खाली के अनुसार होती है । तथा जिसमे ताल के अनुरूप ही बोल लगाये जाते है , उसे कायदा कहते है ।

तिहाई -

तिहाई का शाब्दिक अर्थ तीन आवर्तन में बोलो को बजाना या दुसरे शब्दों में जब कोई बोल किसी मातृ या स्थान से उठकर , तीन बार बजने पर अंतिम "डीएचए" सम पर आता है , तो उस बोल या रचना को तिहाई कहते है |

पलटा -

कायदे में बजने वाले बोलो को उलट - पलट का " ताल" के रूप को ना बदलते हुए , नयी रचनायें या कायदे का विस्तार करना ही पलटा कहलाता है .

तबले के बोल -

दाँया

ना - मैदान में
ता - किनार में

ना / ता + धे = धा

बाँया

गे / धे